



# तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

तिम कुगुर छें कूवा सारिषा,  
जाजम सम रे कर्ने साध रो भेष।  
त्यानें गुर लेखव बंदणा करें,  
ते डूबें रे मूरख अंध अदेख।।

कुगुर कुए के समान हैं, साधु का वेश  
जाजम के समान। कुगुर को जो गुरु  
मान वंदना करता है वह मूर्ख अज्ञानी  
डूब जाता है।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 26 • अंक 24 • 17 मार्च - 23 मार्च, 2025



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 15-03-2025 • पेज 12

₹ 10 रुपये



संयम और तप से प्रशस्त  
होता है आत्मानुशासन  
का मार्ग : आचार्यश्री  
महाश्रमण

पेज 11



कषाय को प्रतनू करना  
रहे हमारी साधना का  
लक्ष्य : आचार्यश्री  
महाश्रमण

पेज 12

Address  
Here

## अनित्यता का चिंतन करने से क्षीण हो सकता है मोह : आचार्यश्री महाश्रमण

‘जैनं जयतु शासनम्’ कार्यक्रम में विभिन्न जैन आम्नायों के श्रावक-श्राविकाओं ने पाई शुद्ध साधना की प्रेरणा

गांधीधाम।

09 मार्च, 2025

संयम सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी के गांधीधाम प्रवास के पंचम दिवस ‘जैनं जयतु शासनम्’ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपनी पावन देशना में फरमाया कि जैन वाङ्मय में तीर्थंकरों का सर्वोपरि स्थान होता है। तीर्थंकरों की देशना सुनने का अवसर मिलना अत्यंत सौभाग्य की बात होती है। यदि उनकी वाणी को श्रद्धा और सम्मान के साथ सुना जाए, तो वह आत्मिक कल्याण का निमित्त बन सकती है। तीर्थंकर सदा और सर्वत्र उपलब्ध नहीं होते, लेकिन सौभाग्य से आगम साहित्य हमारे पास विद्यमान है।

आगम वाणी के आधार पर साधना-पथ प्रशस्त हो सकता है और जीवन को सही दिशा मिल सकती है। यदि हम



आगम वचनों पर श्रद्धा रखें, तो वैराग्य-भाव दृढ़ हो सकता है। आचार्यश्री ने कहा कि मनुष्य जीवन अनित्य है। जैसे वृक्ष का पका हुआ पत्ता एक दिन टूटकर गिर जाता है, वैसे ही यह जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाता है। इसलिए एक क्षण भी प्रमाद में नष्ट न करें।

अनित्यता का चिंतन करने से मोह और आसक्ति कमजोर हो सकती है और व्यक्ति आध्यात्मिक जागृति की ओर बढ़ सकता है। गृहस्थ जीवन में धन, पद और प्रतिष्ठा का संयोग हो सकता है, लेकिन यह सब क्षणभंगुर है। जिस चीज का संयोग होता है, उसका कभी न कभी

वियोग भी निश्चित होता है।

धन केवल इस जीवन तक साथ रहता है, परंतु त्याग और संयम जीवनभर व्यक्ति का सहचर बन सकता है। आचार्यश्री ने समझाया कि लक्ष्मी, प्राण, जीवन और जवानी— ये सब अत्यंत चंचल हैं। पुण्य के योग से व्यक्ति

उच्च पद प्राप्त कर सकता है, लेकिन वह पद भी स्थायी नहीं होता। श्रावकत्व जीवनभर बना रह सकता है।

यदि कोई अनित्यता पर विचार करे, तो उसका मोह भाव क्षीण हो सकता है और वह आत्माभिमुख बनने का प्रयास कर सकता है। जीवन का सत्य यह है कि मनुष्य खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही चला जाता है। इसलिए जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह धर्म और अध्यात्म की साधना में प्रवृत्त हो।

आचार्यश्री ने बताया कि जैन धर्म में दो प्रमुख धाराएँ हैं— दिगंबर और श्वेतांबर। कालांतर में इनमें अनेक शाखाएँ विकसित हुईं। यद्यपि कुछ संदर्भों में मतभेद हो सकते हैं, परंतु अनेक संदर्भों में एकता भी विद्यमान है।

‘जैनं जयतु शासनम्’— यदि हमारे कार्य और साधना श्रेष्ठ हो, तो जैन शासन की कीर्ति चारों दिशाओं में फैलेगी। (शेष पेज 9 पर)

## ज्ञानार्जन में हो तर्क पर आज्ञा आराधन में रहें सतर्क : आचार्यश्री महाश्रमण



गांधीधाम।

10 मार्च, 2025

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महावीर आध्यात्मिक समवसरण में जनता को पावन प्रेरणा देते हुए कहा कि धर्म शब्द दुनियाभर में काफी प्रसिद्ध है। चाहे हिंदी भाषी हो या अन्य भाषी लोग, धर्म का जिक्र हर जगह होता है। अलग-अलग धर्मों के अनुयायी मिल सकते हैं, लेकिन बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो किसी भी धर्म को नहीं मानते।

आचार्यश्री ने बताया कि नास्तिक भी

इस दुनिया में होते हैं। वे स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म, पुण्य-पाप और ईश्वर को नहीं मानते। दार्शनिक दृष्टि से छः प्रमुख दर्शन बताए गए हैं, जिनमें चार्वाक दर्शन नास्तिकवाद की विचारधारा को मान्यता देता है। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि दर्शन के विभिन्न विचार हो सकते हैं, लेकिन सच्चाई का महत्व सर्वोपरि है।

विचारधारा में परिवर्तन संभव है— कोई नास्तिक से आस्तिक बन सकता है और आस्तिक से नास्तिक। जो बात सही लगे उसे ग्रहण कर लेना और मान-सम्मान देना आवश्यक है। आचार्यश्री ने

अनेकान्तवाद के दृष्टिकोण को अपनाने का सुझाव दिया, ताकि संकीर्णता से बचा जा सके और सही बात का समर्थन किया जा सके। उन्होंने कहा कि सही विचार का अवांछनीय खंडन नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे समझकर और स्वीकार कर जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

जहां ज्ञानार्जन की बात हो वहां तर्क किया जा सकता है, लेकिन जहां आज्ञा की बात हो, वहां सतर्क रहने का प्रयास करना चाहिए। आज्ञा में अनावश्यक तर्क करने से बचने का प्रयास करना चाहिए। (शेष पेज 9 पर)

# जीवन में हो ईमानदारी की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।

07 मार्च, 2025

अध्यात्म के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महावीर आध्यात्मिक समवसरण में आगमवाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आत्मा की दृष्टि से ईमानदारी का अत्यधिक महत्व है। व्यावहारिक जीवन में भी ईमानदारी की अपनी गरिमा होती है। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। ईमानदारी के दो प्रमुख आयाम प्रतीत होते हैं— चोरी न करना और झूठ-कपट से बचना। यदि ये दोनों सिद्धांत जीवन में समाहित हो जाएं, तो व्यक्ति पूर्ण रूप से ईमानदारी को आत्मसात कर सकता है। शास्त्रों में सच्चाई की महिमा का उल्लेख किया गया है—

'सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है, ता हृदय प्रभु आप।'

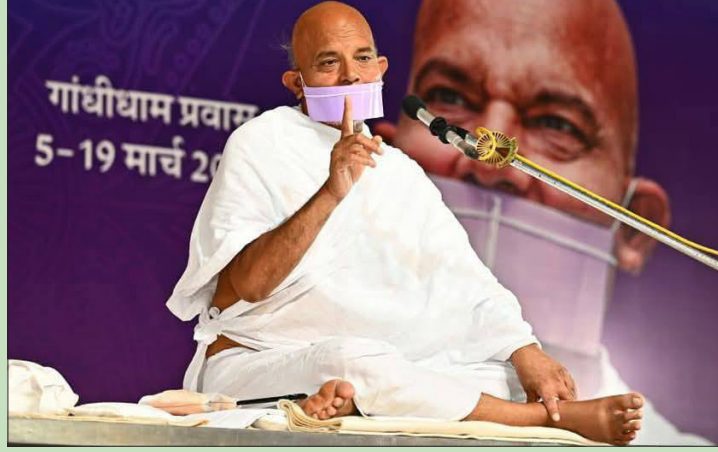
आचार्यश्री ने कहा कि झूठ बोलने वाले को हमेशा तनाव रहता है, जबकि सत्य बोलने वाले को कोई अंतर नहीं पड़ता। हालांकि, सत्य के मार्ग पर कठिनाइयाँ और परेशानियाँ आ सकती हैं, लेकिन सत्य कभी परास्त नहीं होता। अंततः जीत सच्चाई की ही होती है।

आचार्य प्रवर ने न्याय के संबंध में कहा कि व्यक्ति अपने अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय जा सकता है, लेकिन किसी को संकट में डालने या अन्याय करने के उद्देश्य से न्यायालय का उपयोग नहीं करना चाहिए। न्यायालय में न जाना भी एक संयम हो सकता है।

**तीन मार्ग होते हैं—**

1. झूठ बोलना
2. सच बोलना
3. चुप रहना

हर स्थिति में सच उजागर करना



आवश्यक नहीं होता, लेकिन जब बोलें तो छल-कपट रहित, विवेकपूर्ण और संयमित शब्दों में सत्य बोलें। ईमानदारी जीवन की अमूल्य संपत्ति है। पैसा इस जीवन तक साथ रहता है, लेकिन ईमानदारी आगे भी कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है।

लोक में सत्य ही सारभूत है। सच

बोलने से विश्वास बना रहता है। बात भले ही कड़वी हो, लेकिन खरी हो तो स्थायित्व और प्रतिष्ठा बनी रहती है। यदि दुकानदार ईमानदार है, तो यह उसके व्यापार के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। झूठ नहीं बोलने से पाप कर्मों से बचाव होता है, सच्चाई से चेतना निर्मल बनती है, विश्वास बढ़ता

है और समाज में प्रतिष्ठा भी स्थापित होती है। हमें अपने जीवन में ईमानदारी की आराधना करनी चाहिए और झूठ-कपट तथा चोरी से बचने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में कच्छ से संबद्ध साध्वी हेमलताजी, गांधीधाम से संबद्ध साध्वी मंगलयशाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। श्री टोहाणा महाजन समाज से मोहनभाई धारशी, सिंधी समाज की ओर से डॉ. कुन्दनभाई गवलानी, तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष मंजूबेन संघवी, टीपीएफ के अध्यक्ष मुदित जैन, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

'बेटी तेरापंथ की' से जुड़ी बेटियों, तेरापंथ कन्या मण्डल, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ युवक परिषद ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

# संस्कार निर्माण में अति महत्वपूर्ण है महिलाओं की भूमिका : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।

08 मार्च, 2025

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जनोद्धारक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रवचन देते हुए फरमाया कि आर्हत वाङ्मय में श्रमण संघ का उल्लेख किया गया है। श्रमण संघ चतुर्वर्णी होता है— अर्थात् चार रूपों में विभक्त होता है। ये चार अंग हैं— साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। आश्चर्य की बात यह है कि श्रावक-श्राविका को भी श्रमण संघ के अवयवों में सम्मिलित किया गया है।

आचार्यश्री ने कहा कि अर्हत अथवा तीर्थंकर तीर्थ की स्थापना करने वाले होते हैं। वे असीम कल्याणकारी कार्य करते हैं। वर्तमान में जंबूद्वीप के इस भाग में तीर्थंकरों की सन्निधि नहीं मानी जाती। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के भरत क्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर हुए हैं। अब इस अवसर्पिणी काल में कोई नए तीर्थंकर प्राप्त नहीं होंगे। हालांकि, हमें आगम प्राप्त हैं और आगमों में चतुर्विध धर्म संघ की चर्चा की गई है। साधु सर्वविरति धारी होते हैं, जबकि श्रावक देशविरति धारी होते हैं। साधु-साध्वियों की साधना में श्रावकों का विशेष योगदान रहता है। आगम में श्रावक-श्राविका को साधु-साध्वियों के माता-पिता के समान बताया गया है। श्राविका समाज धर्म और समाज सेवा



में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज का विषय है— 'हमारी संस्कृति, हमारा परिवार।' संस्कृति का शिक्षण परिवार से भी प्राप्त हो सकता है। संस्कृति की सुरक्षा में साहित्य भी सहायक हो सकता है। संस्कार और संस्कृति— दोनों शब्दों में नैकट्य है। परिवार संस्कारों की पाठशाला होता है। संस्कारों को मजबूत करने में बहनों एवं माताओं का विशेष योगदान हो सकता है। बच्चों के लिए माता-पिता प्रथम शिक्षक होते हैं। वे उन्हें कैसे संस्कारित करें, यह महत्वपूर्ण है। बच्चे कोरे कागज की तरह होते हैं, लेकिन

वे अपने पिछले जन्मों के संस्कार भी साथ लेकर आते हैं। उचित मार्गदर्शन और सही वातावरण मिलने पर संस्कार उजागर हो सकते हैं। अच्छे संस्कार गलत कार्यों से बचा सकते हैं। आत्मा में सद्गुण और संस्कार भरे होते हैं। जब क्षयोपशम होता है और क्षायिक भाव प्रकट होते हैं, तो भीतर के शुभ भाव तथा शुक्ललेश्या के भाव प्रबल हो सकते हैं।

आज 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। दुनिया में पुरुषों का महत्त्व है तो महिलाओं की अपनी उपयोगिता और महत्ता हो सकती है। जिसकी जहां

उपयोगिता होती है, यदि उसका सही उपयोग किया जाए तो समाज में सुगमता और प्रगति हो सकती है। हमारे धर्म संघ में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल कार्यरत है, जिसकी अनेक शाखाएँ हैं। यह संगठन ज्ञानवर्धक और आध्यात्मिक गतिविधियों का संचालन कर रहा है। इसके कारण कई महिलाओं को विकास के अवसर मिले हैं। महिला मण्डल है, कन्या मण्डल है, बेटी तेरापंथ की के नाम से भी एक उपक्रम चल रहा है।

श्वेतांबर परंपरा में उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री माना गया है और

साध्वी को भी मोक्षगामी माना गया है। जबकि दिग्बर परंपरा में यह मान्यता नहीं है। परंपराओं में भले ही मतभेद हो सकते हैं, लेकिन महिला आध्यात्मिक उन्नति कर सकती है। हमारे साध्वी समाज, समणी वर्ग और श्राविका समाज में भी निरंतर विकास हो रहा है। हमारा धार्मिक एवं आध्यात्मिक उत्थान होता रहे, और हम बच्चों को उत्तम संस्कार देते रहें।

महिलाओं की भूमिका संस्कार निर्माण में अति महत्वपूर्ण है। कई संतानें ऐसी होती हैं, जो इतने ऊँचे स्थान पर पहुँच जाती हैं कि उनकी माताएँ गौरवान्वित हो जाती हैं। आचार्यश्री ने कहा— मातृश्री वदनाजी को मैंने बचपन में देखा है। हमारे आचार्यों को भी बचपन में संस्कार देने का क्रम माताओं द्वारा बना है। हमारा परिवार संस्कारों का पारावार बना रहे, हमारी संस्कृति सुरक्षित रहे। परिवार, समाज, देश और संपूर्ण विश्व उन्नति करे। महिला समाज धार्मिक एवं आध्यात्मिक सेवा में आगे बढ़ता रहे, यही शुभेच्छा है। पूज्यप्रवर की सन्निधि में गांधीधाम की विधायक मालतीबेन माहेश्वरी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में तेरापंथ महिला मण्डल-गांधीधाम की बहनों ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# चरित्र निर्माण की बुनियाद है अणुव्रत

जयपुर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित 77वें अणुव्रत स्थापना दिवस का कार्यक्रम 'शासनगौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत महामंत्रोच्चारण से हुई। अणुव्रत समिति के युवा कार्यकर्ताओं कमलेश बरडिया, गणपत भंडारी और सौरभ जैन ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी।

अणुविभा केंद्र के महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री जी ने अणुव्रत को मानवधर्म, असांप्रदायिक धर्म और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का आधार बताया। उन्होंने कहा कि धर्मक्रांति के सूत्रधार आचार्यश्री तुलसी ने जन-जन की नैतिक चेतना

जगाने के उद्देश्य से 1 मार्च 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत की दार्शनिक व्याख्या कर इसे प्रबुद्ध वर्ग तक पहुँचाया, और वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण अपनी ऐतिहासिक देशव्यापी अहिंसा यात्रा के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव, नैतिक जागरूकता और नशामुक्ति का संदेश देकर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का भगीरथ प्रयास कर रहे हैं।

सात्विक और सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि सदाचार केवल शब्दों तक सीमित न रहे, बल्कि उसे आचरण में उतारना आवश्यक है। साध्वीवृंद ने 'लोकपुरुष की ज्योतिर्मय यात्रा' गीत का सामूहिक संगान किया।

अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष विमल गोलछा ने स्वागत भाषण द्वारा सभी आगंतुकों का अभिनंदन किया।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित नरेन्द्र शर्मा (कुसुम) ने काव्य के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। जयपुर पब्लिक स्कूल की नर्तकी छात्राएं, काव्या ठाकुर (द्वितीय कक्षा) और महिमा चौधरी (तृतीय कक्षा) ने कविता के माध्यम से आचार्य तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की। इसी क्रम में, दसवीं कक्षा की छात्राओं नैनिका सिंग और गरिमा सैन ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने विचार साझा किए।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, अणुविभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद सहित कई प्रतिष्ठित सभा-संस्थाओं के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति जयपुर की मंत्री जयश्री सिद्धा ने कार्यक्रम का संयोजन किया, जबकि अणुव्रत समिति के सहमंत्री पवन जैन ने आभार व्यक्त किया।

# धर्म और व्यवहार का सेतु है अणुव्रत

कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य एवं अणुव्रत विश्वभारती सोसायटी के तत्वावधान में 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस व्योम सोसायटी में अणुव्रत समिति कोलकाता-हावड़ा द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा आचार्य श्री तुलसी त्रैकालिक दृष्टि सम्पन्न महापुरुष थे। उन्होंने अतीत का अनुसंधान किया, वर्तमान को समझने और भविष्य को अपनी दूर दृष्टि से पहचानने का प्रयास किया।

अणुव्रत उसी त्रैकालिक चिन्तन की फलश्रुति है। अणुव्रत मानवता, नैतिकता और अहिंसा तीनों का समन्वय है। अणुव्रत एक ऐसा असांप्रदायिक धर्म है जिसकी अपेक्षा और उपयोगिता शाश्वत है। अणुव्रत आन्दोलन जीवन की मूल भित्ति को सुदृढ़ बनाने का उपक्रम है। अणुव्रत धर्म और व्यवहार का सेतु है। अणुव्रत का अर्थ है-अपने से अपना अनुशासन। अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ 1 मार्च 1949 को आचार्य तुलसी के द्वारा हुआ था।

यह दिन तेरापंथ के आठवें आचार्य श्री कालूगणी के जन्म दिन के रूप में स्थापित है। कालूगणी ने धर्मसंध में विद्या के विकास के लिए विशिष्ट प्रयत्न किये। 77 वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर सभी अणुव्रत के संकल्पों को अपनाएँ।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति कोलकाता, हावड़ा के कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुविभा सोसायटी के ट्रस्टी रतन दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन करते हुए उन्हें स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान की। स्वागत वक्तव्य अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने दिया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बेहाला के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने विचार व्यक्त किये। व्योम सोसायटी की बहनों ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम से पूर्व अणुव्रत रैली का भी आयोजन किया गया।

# 'स्वीकार्यता - सफलता की कुंजी' विषय पर गोष्ठी का आयोजन

बंगलुरु।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में 'स्वीकार्यता - सफलता की कुंजी' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुनिश्री ने कहा कि सफलता केवल व्यवसाय और पेशे तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह समाज और संस्थाओं में आपके योगदान पर भी निर्भर करती

है। केवल व्यक्तिगत रूप से सफल होना पर्याप्त नहीं, बल्कि सद्भाव और दूसरों की सहायता करने से ही सच्ची सफलता प्राप्त होती है। यदि किसी को मार्गदर्शन की आवश्यकता हो तो उसे सदैव सहयोग प्रदान करें।

मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि TPF एकमात्र ऐसा संगठन है जहां योग्यता (Qualification) मायने रखती है।

उन्होंने यह भी कहा कि हमें दूसरों

की सफलता से प्रेरणा लेनी चाहिए, न की ईर्ष्या करनी चाहिए। यह समझना आवश्यक है कि किसी ने सफलता कैसे प्राप्त की और हमें भी उसी दिशा में प्रयास करना चाहिए।

सत्र के दौरान मुनिश्री ने उपस्थित सदस्यों के विभिन्न प्रश्नों का समाधान किया, जिसमें अनचाहे विचारों को नियंत्रित करने, जैन धर्म में विज्ञान की भूमिका और आस्था से जुड़े प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा हुई।

# फिजियोथैरेपी सेंटर का हुआ शुभारंभ

गदग।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गदग द्वारा संचालित आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर गदग का शुभारंभ डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में किया गया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा तेरापंथ महिला मंडल आचार्य श्री महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर के माध्यम से वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से मानव सेवा का कार्य कर रही है, जो सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है। इस सेंटर में आने वाले हर व्यक्ति को नशा मुक्ति की प्रेरणा भी दी जानी चाहिए। कार्यक्रम में रेड क्रॉस सोसायटी गदग के अध्यक्ष डॉ. आर. एन. गोडबोले

ने रेड क्रॉस सोसायटी में चलने वाली गतिविधियों की जानकारी देते हुए मुनिवर एवं आंगतुक मेहमानों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जे. सी. शिरोल उपस्थित थे। रेड क्रॉस सोसायटी गदग के मंत्री डॉ. एम. डी. सामुद्री ने तेरापंथ महिला मंडल गदग के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ. शिरोल द्वारा विकलांग व्यक्तियों को जयपुर फुट का वितरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष विजेता भंसाली, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश कोठारी ने विचार व्यक्त किये। उपासिका विमला कोठारी, महिला मंडल मंत्री इंदिरा सालेचा तथा स्थानकवासी महिला मंडल अध्यक्ष ममता लुंकड़ के साथ जैन समाज के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

# 'पच्चीस बोल की परिक्रमा' क्विज का आयोजन

मंड्या।

जीवन में आध्यात्मिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करने वाले कृपानिधि आचार्य श्री महाश्रमणजी ने वर्ष 2025 में पच्चीस बोल के माध्यम से ज्ञान सागर में डुबकी लगाने की प्रेरणा प्रदान की। उसी प्रेरणा का अनुसरण करते हुए, साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में मंड्या में 'पच्चीस बोल की परिक्रमा क्विज' का आयोजन किया गया।

साध्वी सिद्धप्रभाजी द्वारा कई दिनों

से पच्चीस बोल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, इनके कंठस्थ अभ्यास का क्रम चलाया जा रहा था। इसी क्रम में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को विभिन्न समूहों में विभाजित किया गया। क्विज साध्वी आस्थाप्रभाजी एवं साध्वी दीक्षाप्रभाजी के संचालन में 7 विभिन्न राउंड्स में संपन्न हुआ। फाइनल राउंड के उपरांत टीम E ने प्रथम स्थान, टीम A ने द्वितीय स्थान और टीम B ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

साध्वी सिद्धप्रभाजी ने उपस्थित दर्शकों को आगामी प्रतियोगिता में प्रतिभागी बनने तथा शीघ्रतिशीघ्र पच्चीस बोल कंठस्थ करने की प्रेरणा प्रदान की। महिला मंडल से ललिता भंसाली ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने विचार रखे। अंत में पुरस्कार वितरण का आयोजन सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने कुशलता पूर्वक किया। आयोजन में महिला मंडल एवं कन्या मंडल का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।



## संक्षिप्त खबर

# मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

**शिवकाशी।** अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष में तेरापंथ महिला मंडल शिवकाशी द्वारा फरवरी माह की कार्यशाला प्रेक्षा प्रवाह शांति और शक्ति के अंतर्गत मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला उप मंत्री प्रेम बैद के निवास स्थान पर आयोजित की गयी। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया।

शिवकाशी कन्या मंडल की बहन दीप्ति बैद ने मंत्र की महिमा को बहुत ही सुंदर व विस्तार पूर्वक बताया कि इस मंत्र की साधना करने से आत्मा पवित्र व निर्मल बनती है। एक कहानी के माध्यम से भी समझाते हुए कहा कि इस मंत्र में अपार शक्ति है तथा मंत्र उच्चारण का निश्चित समय, निश्चित स्थान, वह एकाग्रता के साथ करने से अत्यंत लाभकारी होता है, तत्पश्चात प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया गया। कार्यशाला का कुशल संचालन और धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष रानी बरडिया ने किया।

# सप्त दिवसीय 'योगा से होगा' कार्यक्रम का समापन

**विजयनगर।** अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर द्वारा विशेष योग शिविर के सातवें दिवस का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ तेरापंथ सभा भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर परिषद् सहमंत्री कमलेश दक ने अनेक योगिक क्रियाओं को संपादित करवाया। इस योग शिविर के अंतिम दिवस में अभातेयुप फिट युवा हिट युवा आयाम के दक्षिण प्रभारी राकेश पोखरणा ने योगाभ्यास को निरंतर करने का आह्वान किया। विजयनगर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, पदाधिकारी, आयाम संयोजक सुशील गांधी एवं तेयुप कार्यकारिणी सदस्यों की सहभागिता रही।

# मैमोग्राफी जांच का सफल आयोजन

**इंदौर।** तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम इंदौर एवं एम.ओ.सी. कैसर केयर एवं रिसर्च सेंटर इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व कैसर दिवस के अवसर पर मैमोग्राफी जांच का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य स्तन कैसर का समय रहते पता लगाने और शुरुआती जांच के बारे में जागरूकता फैलाना था। इस कार्यक्रम में 40 वर्ष से अधिक आयु की सभी महिलाओं के लिए निःशुल्क मैमोग्राम की गई।

इसमें TPF फेमिना विंग का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। 15 महिलाओं ने इस जांच शिविर का लाभ उठाया। इस अवसर पर महासभा के कार्यसमिति सदस्य रमणलाल कोटडिया, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा, टीपीएफ अध्यक्ष चंद्र कुमार भटेरा, फेमिना विंग से त्रिशा कोटडिया, पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

# स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

**बेंगलुरु (गांधीनगर)।** तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु (गांधीनगर) द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पैलेस गुडल्ली द्वारा क्षेत्र के गणेश मंदिर में दो दिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। शिविर में 156 लाभार्थियों ने स्वास्थ्य जांच का लाभ उठाया। आयोजन में तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, संयोजक पंकज भंडारी, सह संयोजक मुदित कोठारी, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का सहयोग एवं श्रम नियोजित हुआ।

# आध्यात्मिक मिलन समारोह में दिखा हर्षोल्लास

## अजमेर।

बहुश्रुत परिषद् के सम्मानित सदस्य, दिल्ली की ओर विहाररत मुनि उदितकुमार जी ठाणा 3 एवं बालोतरा की ओर विहाररत साध्वी अणिमाश्री जी ठाणा-5 का आध्यात्मिक मिलन अजमेर रोड पर हुआ। चार तीर्थ के मिलन के साक्षी बने जयपुर, दिल्ली, अजमेर व ब्यावर के भाई-बहन इस नयनाभिराम दृश्य को देखकर हर्ष विभोर हो गए।

मुनि उदितकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा- हमारा धर्म संघ परिवार है। इस परिवार के अंतरंग सदस्य जब एक दूसरे से मिलते हैं तो उनके हृदय कमल ही नहीं खिलते बल्कि आसपास के परिवेश में भी बहार आ जाती है। आज विहार करते हुए हमारा साध्वी अणिमाश्रीजी आदि साध्वी वृंद से मिलना हुआ है।

साध्वी अणिमाश्री जी मेरी संसारपक्षीय नानीसा लगते हैं। नानीजी महाराज से मिलकर मन प्रफुल्लित एवं प्रमुदित है। साध्वीश्री उम्र से ज्येष्ठ, दीक्षा पर्याय से ज्येष्ठ एवं ज्ञानवृद्ध एवं अनुभववृद्ध हैं। ये धर्मसंघ की अतिशय प्रभावना करने वाली साध्वी हैं।

श्रद्धेय मंत्री मुनिवर फरमाते थे कि हमारे धर्मसंघ की कुछ साध्वियां संतों

से कम नहीं बल्कि समकक्ष या आगे भी कही जा सकती है। मुझे लगता है उन कुछ साध्वियों में एक नाम साध्वी अणिमाश्रीजी का लिया जा सकता है। साध्वीश्री की प्रवचन शैली बेजोड़ एवं विशिष्ट है। आप जहाँ भी पधारती हैं अपनी प्रवचन शैली से अपना सिक्का जमा लेती हैं। इन्होंने केन्द्र में भी अपनी विशिष्ट पहचान एवं छवि बनाई है। क्षेत्र को परोटने की कला में निष्णात है। हम यही मंगलकामना करते हैं कि आप और हम सब धर्मसंघ की गौरववृद्धि करते रहें।

मुनिश्री ने कहा- हम शासन-माली की पावन सन्निधि से ऊर्जा लेकर आए हैं। पूज्यवर ने सभी से सुखपृच्छा की है। हमने देखा आचार्यवर की पुण्याई अहर्निश बढ़ती जा रही है। पूज्यवर का हर चातुर्मास संघ में कीर्तिमान गढ़ रहा है।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा आज बहिर्विहार में पहली बार बहुश्रुत मुनिवर मेरे दोहिते महाराज के

दर्शन हुए हैं। मुनिश्री सौभाग्यशाली हैं जिन्हें पूज्यप्रवर के सह-दीक्षित होने का प्राप्त है। मुनिश्री को वर्षों तक मंत्री मुनिवर की प्रेरक सन्निधि प्राप्त हुई है। मंत्री मुनिवर से ज्ञान मणियों को बटोरकर अपने ज्ञानकोश को समृद्ध किया है। आपका प्रबंधन कौशल बेजोड़ है। पूज्यप्रवर के सूरत चातुर्मास की पूर्व भूमिका में आपश्री का सराहनीय श्रम रहा है। जन-जन की जुबां से हमने आपके नाम को सुना है। आपने अनेक श्रावक कार्यकर्ता तैयार किए हैं। अनेकों युवकों को



हमने देखा  
आचार्यवर की  
पुण्याई अहर्निश  
बढ़ती जा रही है।  
पूज्यवर का हर  
चातुर्मास संघ  
में कीर्तिमान गढ़  
रहा है।

धर्मसंघ से जोड़कर धर्मसंघ की सेवा में योजित किया है। अब आपश्री का दिल्ली चातुर्मास है एवं पूज्यवर का दिल्ली चातुर्मास घोषित है। आपश्री की प्रेरणा से दिल्ली में अच्छी जागृति आए एवं पूज्यप्रवर का दिल्ली का चातुर्मास सिद्ध चातुर्मास हो यह मंगलकामना करते हैं। साध्वीवृन्द ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं संप्रेषित की।

# साधना की गहराई में जाने वाला ही पा सकता है अपना लक्ष्य

## सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल परिसर के भिक्षु आराध्यम् में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अन्तर्गत षष्ठम प्रेक्षाध्यान शिविर की आयोजना का समापन समारोह हुआ। इस शिविर में लगभग 32 साधक-साधिकाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मुनि धर्मेशकुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा-शिविर साधना का मुख्य ध्येय

है-आत्मोपलब्धि। साधना की गहराई में जाने वाला ही अपने लक्ष्य को पा सकता है। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा- प्रत्येक आत्मा अनंत शक्ति सम्पन्न है।

जब ध्याता, ध्येय और ध्यान एक रूप हो जाते हैं तभी आत्म साक्षात्कार हो सकता है। ध्यान के प्रयोग से बिखरी शक्ति को एक स्थान पर एकत्रित कर उसका सदुपयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रेक्षा साधिकाओं ने

प्रेक्षागीत का संगान किया। उतमचंद्र सुखलेचा ने अपने विचार प्रकट करते हुए सभी का स्वागत किया। डालमचंद्र बांठिया, हेमराज सुंदेचा, हनुमान बरडिया, ऋषभ बरडिया, सीमा कावडिया, हिम्मत बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में शिविरार्थियों को साहित्य एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन रणजीता बागरेचा ने किया। आभार अभिषेक दूगड़ ने प्रकट किया।

## णमोत्थुणं अनुष्ठान का हुआ भव्य आयोजन

पारश्वनाथ सिटी, जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में णमोत्थुणं अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा यह एक तीर्थकर स्तुति है जो इन्द्रों द्वारा की गई है। इस पाठ में सिद्ध, तीर्थकर व केवलियों की स्तुति की गई है। इस स्तुति के माध्यम से हम लोक में फैली हुई अरिहन्तों की

शुभतम तरंगें ग्रहण कर अपने अन्दर पवित्रता का विकास कर सकते हैं।

साथ ही साथ यह आध्यात्मिक संपदा की और उत्थान करने का सफल उपक्रम भी है। इस स्तुति के तीन नाम हैं- प्रणिपात सूत्र, शक्र स्तव, णमोत्थुणं। संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने निष्ठा के साथ एकाग्र चित्त होकर आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति की।

### संक्षिप्त खबर

## प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का आयोजन

कोयंबटूर। अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर द्वारा मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत मंगलाचरण एवं प्रेरणा गीत के संगान के साथ हुई। स्थानीय मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला में 'मंत्रों की साधना द्वारा शांति व शक्ति का विकास' विषय पर प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका मधु बांठिया ने विचार रखे। नमस्कार महामंत्र पर रंगों के साथ ध्यान करवाया। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराना ने दिया। ममता पुगलिया ने संचालन किया।

## टीपीएफ द्वारा मीट एंड ग्रीट का आयोजन

उधना। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम उधना द्वारा मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम का आयोजन वेसु में किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के विशेष आयामों के बारे में सभी सदस्यों को संक्षिप्त जानकारी दी गयी। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, उधना के उपस्थित सभी सदस्यों ने अपना परिचय दिया। संयोजक अभिषेक बाफना और भरत गंग का सराहनीय श्रम रहा। आभार अभिषेक बाफना ने किया।

## साइक्लोथोन का सफल आयोजन

इंदौर। टीपीएफ इंदौर द्वारा साइक्लोथोन 3 का भव्य और सफल आयोजन किया गया। इस वार्षिक आयोजन में समाज के सदस्यों ने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में समाज के कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों की उपस्थिति रही, जिन्होंने आयोजन की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश कांठेड़, महासभा कार्यसमिति सदस्य रमणलाल कोटडिया, विवेक राखेचा, टीपीएफ इंदौर अध्यक्ष सीए चंद्र कुमार भटेरा, पदाधिकारी एवं सदस्यों सहित समाज के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। साइक्लोथोन के दौरान उपस्थित सभी सदस्यों ने 15 किलोमीटर साइकिल चलाई। कार्यक्रम के सफल समापन पर टीपीएफ मंत्री मोहित कोटडिया ने सभी अतिथियों और सहभागियों का आभार व्यक्त किया।

## आध्यात्मिक मिलन

बोरावड़। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी जागृतयशाजी एवं साध्वी जीतयशाजी का बोरावड़ में पदार्पण हुआ। साध्वीश्री का बोरावड़ में विराजित साध्वी गुप्तिप्रभाजी सहित अन्य साध्वियों के साथ आध्यात्मिक मिलन हुआ। मीडिया प्रभारी कैलाश गेलड़ा ने जानकारी दी कि बोरावड़ श्रावक समाज की ओर से साध्वीश्री की अगवानी के लिए तेरापंथ सभा अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा, सभा मंत्री गजेन्द्र बोथरा, पदाधिकारी, महिला मंडल सहित अन्य उपस्थित रहे।

### संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन



### जैन विधि-अमूल्य निधि



#### नामकरण संस्कार

■ **सिलीगुड़ी।** सादुलपुर निवासी सिलीगुड़ी प्रवासी मंगल चंद-मंजु मालू की सुपौत्री, डॉ. अभिषेक-हर्षा मालू की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उनके निवास पर हुआ। संस्कारक जयंत सुराणा एवं विनीत लुनिया ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से नामकरण संस्कार सानन्द संपादित करवाया।

#### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **अहमदाबाद।** तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद के अंतर्गत दीपक संचेती के नवनिर्मित प्रतिष्ठान तुलसी हार्डवेयर का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक डालिमचंद नवलखा, प्रकाश धींग, आनंद बोथरा, अपूर्व मोदी एवं प्रदीप बागरेचा ने संपादित करवाया।

■ **अहमदाबाद।** डॉ. जिज्ञासा दिलीप सकलेचा के नवनिर्मित डेंटल क्लिनिक का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक डालिमचंद नवलखा, विक्रम दूगड़, आनंद बोथरा, अपूर्व मोदी एवं प्रदीप बागरेचा ने संपादित करवाया।

#### पाणिग्रहण संस्कार

■ **साउथ हावड़ा।** सरदारशहर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी उम्मेद कुमार दुगड़ के सुपुत्र प्रकाश दुगड़ का शुभ विवाह सीकर निवासी परमेश्वर शर्मा की सुपुत्री सुरभि शर्मा से जैन संस्कार विधि से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैगाणी एवं बिरेंद्र बोहरा ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम को संपादित कराया।

## सफलता का श्रेय दूसरों को दें

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा जयपुर शहर स्थित मिलाप भवन में मुनि तत्त्वचि जी 'तरूण' के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'हर हाल में रहें खुशहाल' विषय पर वक्तव्य देते हुए डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा कि जो वर्तमान में जीता है, वही वर्धमान को प्राप्त करता है। प्रसन्नता सफलता की पहली शर्त है। उन्होंने

बताया कि प्रसन्नता दूसरों की भूलों को भूलने से प्राप्त होती है, और जो परिस्थितियों से हतोत्साहित या उदास नहीं होता, वही वास्तविक खुशहाली को प्राप्त करता है।

मुनि जागृत कुमार जी ने कहा कि सफलता का श्रेय दूसरों को दें और विफलता की जिम्मेदारी स्वयं लें। यह व्यवहार वास्तविक खुशहाली का आधार बन सकता है। मुनि तत्त्वचि जी 'तरूण' ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन में कषायों के अल्पीकरण से समस्याओं का समाधान होता है। इस अवसर पर उन्होंने आचार्य

महाश्रमण जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन भी किया। कार्यक्रम के दौरान मुनि संभव कुमार जी ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया। इस आयोजन में सैकड़ों श्रद्धालुओं सहित ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रबुद्ध विचारक राजकुमार बड़ड़िया, मर्यादा कोठारी, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, अणुविभा जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, राजेंद्र सेठिया, तेयुप जयपुर अध्यक्ष गौतम बड़ड़िया, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य सहित श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

## मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित

सूरतगढ़।

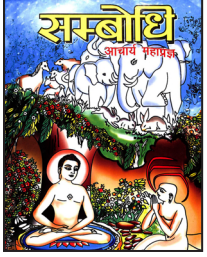
तेरापंथ भवन सूरतगढ़ में साध्वी प्रज्ञावती जी का मंगल भावना कार्यक्रम साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मण्डल के मंगलाचरण से हुई। आत्मवल्लभ तरुणी महिला मण्डल ने भी अपनी भावनाएं गीतिका के माध्यम से रखी। तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा मंजू रांका, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष धनराज नवलखा, मंत्री जयप्रकाश जैन, अनिशा नौलखा,

तेयुप के अमृत चोपड़ा, उषभ रांका ने भी वक्तव्य व गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएं रखी। तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्यों ने गीतिका का संगान किया। महिला मण्डल द्वारा न्यूज चैनल नाटिका के माध्यम से साध्वीश्री द्वारा करवाये गए सभी कार्यक्रमों की जानकारी श्रावक समाज को दी। साध्वी पुनीतयशा जी, साध्वी लक्षितप्रभा जी, साध्वी प्रगतिप्रभा जी व साध्वी प्रणतिप्रभा जी ने साध्वी प्रज्ञावती जी ठाणा-4 के प्रति अपनी भावनाएं गीतिका व वक्तव्य के द्वारा रखी।

साध्वी कीर्तिप्रभा जी, साध्वी मयंकयशा जी व साध्वी प्रशांतयशा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने बताया की हमें सबके प्रति मंगल भावना करनी चाहिए, उससे ना केवल जिसकी कर रहे हैं, उसका मंगल होता है बल्कि स्वयं का भी मंगल होता है।

साध्वी प्रज्ञावती जी ने कहा कि सूरतगढ़ क्षेत्र बहुत साताकारी है, सबकी धर्म व गुरु के प्रति आस्था है। मंच संचालन भरत ऋषि रांका ने किया। कार्यक्रम में सकल जैन समाज के श्रावक उपस्थित थे।

## संबोधि

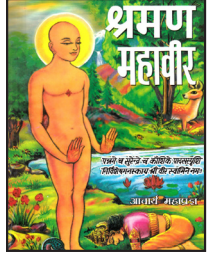


## गृहिधर्मचर्या



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

## श्रमण महावीर

तीर्थ और  
तीर्थकर

४७. उन्मादिशको मार्गनाशकश्चात्मघातकः।  
मोहयित्वात्मनात्मानं, संमोही भावनां ब्रजेत्॥

जो उन्मार्ग का उपदेश करता है, जो दूसरों को सन्मार्ग से भ्रष्ट करता है, जो आत्महत्या करता है, जो अपनी आत्मा को आत्मा से मोहित करता है, उसकी भावना 'संमोही' भावना कहलाती है।

एडमंड वर्क भुलकड स्वभाव के थे। एक बार उन्हें किसी छोटे गांव के चर्च में भाषण देना था। समय था सात बजे का। पहुंच गये घोड़े पर बैठकर चार बजे। वहां कोई नहीं था। सिगरेट पीने लगे। घोड़े का मुंह फेर दिया। वापिस घर चले आये। दिशा के परिवर्तन होते ही सब बदल गया। जीवन भी ऐसा ही है। जीवन की दिशा बदल जाए तो संपूर्ण जीवन कांतिमय हो जाता है। भावनाओं का अभ्यास इसीलिए विकसित किया गया। मनुष्य भावना के अतिरिक्त कुछ नहीं है। वह जो कुछ करता है, वह सारा अर्जित भावना का प्रतिफल है। भावना सत् और असत् दोनों प्रकार की होती है। ये पांच भावनाएं असत् हैं। इन भावनाओं से वासित व्यक्तियों का अधःपतन होता है। वे स्वयं ही अपने हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चलाते हैं। जीसस ने कहा है- 'तुम अपने मुंह में क्या डालते हो, उससे स्वर्ग का राज्य नहीं मिलेगा। किंतु तुम्हारे मुंह से क्या निकलता है उससे स्वर्ग का राज्य मिलेगा।' जैसा बीज बोओगे वैसा फल मिलेगा। विचारों से व्यक्ति की आंतरिकता अभिव्यक्त होती है। ये पांच भावनाएं व्यक्तियों की विविध असत् चेष्टाओं के आधार पर निर्दिष्ट हैं।

(१) कंदर्पी भावना— राबर्ट रिप्ले नामक व्यक्ति के मन में प्रसिद्ध होने का भूत सवार हो गया। किसी व्यक्ति से सलाह मांगी। उसने कहा- 'अपने सिर के आधे बाल कटवा लो और अपना नाम लिखा कर घूमो।' हिम्मत की और शहर में घूम गया। दूसरे दिन अखबारों में फोटो आ गया। मन का संकोच भी मिट गया। अपने सामने कांच रखकर उल्टा चल अमरीका की यात्रा की। लोगों का मन रंजित करने में प्रसिद्ध हो गया। लोगों का मनोरंजन करने लगा। किंतु अंत में अनुभव हुआ कि सब व्यर्थ गया। उसने लिखा है कि- 'प्रदर्शन में जीवन खो दिया।'

(२) अभियोगी भावना— इस संसार में अंततः सब विनष्ट होता है। सुख भी मिलता हुआ लगता है किंतु पास आते ही दुःख में बदल जाता है। फिर भी मनुष्य वैषयिक सुखों के लिए किस तरह प्रयत्नरत है, यह कम आश्चर्यजनक नहीं है। भर्तृहरि ने कहा है- 'मैंने धन की आशंका से जमीन को खोदा, पहाड़ की धातुओं को फूका, मंत्र की आराधना में संलग्न होकर श्मशान में रात्रियां बिताई, राजाओं की सेवा की और समुद्री यात्राएं भी की किंतु फिर भी एक कानी-कोड़ी नहीं मिली। हे तृष्णा ! अब तो तू मेरा पीछा छोड़ !'

(३) किल्बिषिकी भावना— देवदत्त बुद्ध के चचेरा भाई था। बुद्ध उसका भी हित चाहते थे। किंतु वह ईर्ष्यालु था। बुद्ध को मारने के लिए उसने चट्टान नीचे गिराई। (क्रमशः)

भगवान् महावीर साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका-इस तीर्थ-चतुष्टय की स्थापना कर तीर्थकर हो गए। इतने दिन भगवान् व्यक्ति थे और व्यक्तिगत जीवन जीते थे, अब भगवान् संघ बन गए और उनके संघीय जीवन का सिंहद्वार खुल गया।

इतने दिन भगवान् स्वयं के कल्याण में निरत थे, अब उनकी शक्ति जन-कल्याण में लग गई।

भगवान् स्वार्थवश अपने कल्याण में प्रवृत्त नहीं थे। यह एक सिद्धान्त का प्रश्न था। जो व्यक्ति स्वयं खाली है, वह दूसरों को कैसे भरेगा? जिसके पास कुछ नहीं है वह दूसरों को क्या देगा? स्वयं विजेता बनकर ही दूसरों को विजय का पथ दिखाया जा सकता है। स्वयं बुद्ध होकर ही दूसरों को बोध दिया जा सकता है। स्वयं जागृत होकर ही दूसरों को जगाया जा सकता है। भगवान् स्वयं बुद्ध हो गए और दूसरों को बोध देने का अभियान शुरू हो गया।

## ज्ञान-गंगा का प्रवाह

ढाई हजार वर्ष पहले का युग श्रुति और स्मृति का युग था। लिपि का प्रचलन बहुत ही कम था। इसलिए उस युग में स्मृति की विशिष्ट पद्धतियां विकसित थीं। ग्रन्थ-रचना की पद्धति भी स्मृति की सुविधा पर आधारित थी, इसी परिस्थिति में सूत्र-शैली के ग्रन्थों का विकास हुआ, जिनका प्रयोजन था, थोड़े में बहुत कह देना।

इन्द्रभूति आदि गणधरों पर भगवान् महावीर के विचार-प्रसार का दायित्व आ गया। अतः भगवान् के आधारभूत तत्त्वों को समझना उनके लिए आवश्यक था।

इन्द्रभूति ने विनम्र वंदना कर पूछा, 'भंते! तत्त्व क्या है?'

'पदार्थ उत्पन्न होता है।'

'भंते! पदार्थ उत्पत्तिधर्मा है तो वह लोक में कैसे समाएगा?'

'पदार्थ नष्ट होता है।'

'भंते! पदार्थ विनाशधर्मा है तो वह उत्पन्न होगा और नष्ट हो जाएगा, शेष क्या रहेगा?'

'पदार्थ ध्रुव है।'

'भंते! जो उत्पाद-व्ययधर्मा है, वह ध्रुव कैसे होगा? क्या उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य में विरोधाभास नहीं है?'

'यह विरोधाभास नहीं, सापेक्ष दृष्टिकोण है। कुटिया में अंधकार था। दीप जला कि प्रकाश हो गया। वह बुझा, फिर अंधकार हो गया। प्रकाश और अंधकार पर्याय हैं। इनका परिवर्तन होता रहता है। परमाणु ध्रुव हैं। उनका अस्तित्व तामस और तेजस दोनों पर्यायों में अखंड और अबाध रहता है।'

इस त्रिपदी की त्रिपथगा ने गणधरों की बुद्धि को इतना सींचा कि उसके बीज अंकुरित हो गए। सभी गणधरों ने इस त्रिपदी के आधार पर बारह सूत्रों (द्वादशांगी) की रचना की। उसमें भगवान् महावीर के दर्शन और तत्त्वों को प्रतिपादन किया।

गणधरों ने सोचा-हम इतने दिन पर्यायों में उलझ रहे थे, मूल तक पहुंच ही नहीं पाए। मनुष्य, पशु, पक्षी ये सब पर्याय हैं। मूल तत्त्व आत्मा है। आत्मा मूल है और ये सब पर्याय उसी के प्रकाश से प्रकाशित हैं, तब कोई हीन कैसे और अतिरिक्त कैसे? कोई नीच कैसे और ऊंच कैसे? कोई स्पृश्य कैसे और अस्पृश्य कैसे? ये सब पर्याय आत्मा के आलोक से आलोकित हैं, तब जन्मना जाति का अर्थ क्या होगा? जाति वाद तात्त्विक कैसे होगा? स्त्री और शूद्र को हीन मानने का आधार क्या होगा?

देवता और पशु-दोनों एक ही आत्मा की ज्योति से द्योतित हैं, फिर देवता के लिए पशु-बलि देने का औचित्य कैसे स्थापित किया जा सकता है?

इस त्रिपदी ने गणधरों के अन्तःचक्षु खोल दिए। उनके चिरकालीन संस्कार भगवान् की ज्ञान-गंगा के प्रवाह में धुल गए। (क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

## आचार्य भारमल जी युग

## साध्वीश्री गेनांजी "ज्ञानांजी" (गोपालपुरा) दीक्षा क्रमांक 81

साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थी। उन्होंने अनेक तपस्याएं की। पर उसकी तालिका उपलब्ध नहीं। आपने संवत् 1894 में अनशन कर आराधक पद प्राप्त किया।

- साभार: शासन समुद्र -

## धर्म है उत्कृष्ट मंगल



### -आचार्यश्री महाश्रमण विशिष्ट धर्माराधना का पर्व : पर्युषण



पर्युषण पर्व के सात दिनों की सम्यग् आराधना के लिए कुछ बिन्दु श्रावक समाज को सुझाए जा रहे हैं, जिनका यथासम्भव यथोचित रूप से उपयोग किया जा सकता है

- प्रतिदिन कम से कम पांच सामायिक करना।
- प्रतिदिन कम से कम तीन घंटा मौन करना। उसके सिवा अनावश्यक भाषण से विरत रहना।
- प्रतिदिन कम से कम दो घंटा जप अथवा ध्यान करना।
- प्रतिदिन तीनों समय (प्रातः, मध्याह्न व रात्रि में) प्रवचन-श्रवण अथवा उस समय धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय (कुल मिलाकर तीन घंटा) करना।
- प्रतिदिन दवा व पानी के अतिरिक्त नौ द्रव्यों से अधिक न खाना-पीना।
- प्रतिदिन प्रातः नमस्कारसंहिता (नौकारसी) का प्रत्याख्यान रखना। पौरुषी, एकाशन आदि भी क्षमतानुसार किए जा सकते हैं।
- प्रतिदिन रात्रि में चौविहार अथवा तिविहार (चारों आहारों का त्याग अथवा जल के अतिरिक्त सभी आहारों का त्याग) रखना।
- सचित्त खाने-पीने व जमीकन्द की सब्जी के भक्षण का त्याग रखना।
- ब्रह्मचर्य की साधना करना।
- क्षमा की साधना, किंचित् भी कोधपूर्ण व्यवहार किसी के साथ न हो, ऐसा प्रयास रखना।
- मृषावाद से विरत रहना।
- सिनेमा न देखना, अन्य माध्यमों से भी फिल्म आदि न देखना।
- व्यापार आदि से विरत रहना, धार्मिक व्यापार चलाना।
- अधिक समय धर्मस्थान में बीते, ऐसा यथासम्भव प्रयास करना।
- किसी प्रकार के खेल व आमोद-प्रमोद के उत्सवों में भाग न लेना।
- साधु-साध्वियां निकट हों तो उनके दर्शन कए बिना मुंह में पानी भी न लेना।
- सायंकाल स्वयं प्रतिक्रमण करना अथवा सामूहिक प्रतिक्रमण होता हो तो उसमें भाग लेना। ये दोनों ही सम्भव न हो सकें तो दिन भर में क्या किया, उसका निरीक्षण व आत्म-चिन्तन कम से कम २० मिनट करना।
- सात दिन सामूहिक रूप में नमस्कार महामन्त्र आदि का अखण्ड जप भी चलाया जा सकता है जिसमें समय विभाजन कर अनेकानेक व्यक्ति लाभ ले सकते हैं।

सामायिक का अनुष्ठान आध्यात्मिक पोषण का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। इसमें स्थित व्यक्ति सांसारिक कार्य खान-पान आदि से मुक्त हो जाता है।

हिंसा, मृषा, चौर्य, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान आदि अठारह पापों से मुक्त हो एक मुहूर्त तक स्वाध्याय, जप आदि में निरत रहना महान् आत्मशोधन का कार्य है। इसमें संकल्प की दृढ़ता आवश्यक है। पर्युषण के दिनों में तो ज्यादा सामायिक करनी चाहिए किन्तु कितना अच्छा हो हर श्रावक-श्राविका प्रतिदिन एक सामायिक तो लगभग अनिवार्यरूपेण करे। एक सामायिक दिन-रात के चौबीस घंटों की आध्यात्मिक खुराक प्रदान कर सकती है। सामायिक के दौरान तो व्यक्ति राग-द्वेष मुक्त रहता हुआ धर्मपरायण बनता ही है अथवा बनना चाहिए ही। परन्तु सामायिक के कालमान को पूर्णता के पश्चात् भी सामायिक कर्ता यथासम्भव साम्ययोग का सलक्ष्य प्रयास रखे तो जीवन धर्मप्रभावित बन सकता है। सामायिक व साम्ययोग के अभाव में पारिवारिक वैमनस्य और अशांति की स्थिति पैदा होती है। (क्रमशः)

## संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें  
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें  
[abtypitt@gmail.com](mailto:abtypitt@gmail.com)

## अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

### समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा [abtypitt@gmail.com](mailto:abtypitt@gmail.com) पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



## अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

### जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

#### आचार्यश्री माणकलालजी युग

#### मुनिश्री खेमराजजी (धरार) दीक्षा क्रमांक 311

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपके तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/1000 लगभग, 2/27, 3/9, 4/10, 5/10, 6/3, 7/2, 9/1, 17/1, 21/1, 31/2, 32/1, 45/1 अंतिम समय में आपने 54 दिन के संलेखना तप एवं साढा नौ घंटा के अनशन में पंडित मरण प्राप्त किया।

- साभार: शासन समुद्र -



# तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन



## शांति निकेतन, गंगाशहर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष पर तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा प्रेक्षा प्रवाह-संयम और शांति की ओर कार्यशाला के अंतर्गत मंत्र प्रेक्षा का आयोजन उपविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में किया गया। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र की मंत्र प्रेक्षा रंग के साथ निर्धारित केंद्रों पर करवाते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने बताया कि मंत्र प्रेक्षा से सुख-शांति एवं समृद्धि आती है साथ ही एकाग्रता का विकास होता है। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने जानकारी देते हुए कहा कि मुनि श्री की प्रेरणा से प्रत्येक रविवार को गंगाशहर के घरों में महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान करवाया जाता है। प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ की मासिक जंयती पर महाप्रज्ञ चालीसा का भी संगान किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष संजू लालानी, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण के साथ लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

## कोयंबटूर

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर द्वारा 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार सह अस्तित्व या संघर्ष' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। स्थानीय मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सबका स्वागत किया। इस प्रतियोगिता में 8 लोगों ने भाग लिया जिनमें प्रथम स्थान पर डिम्पल बोथरा रही। निर्णायक की भूमिका मधु बांठिया व बबीता गुनेचा ने निभाई। मंजू घोषल, सीमा चौरडिया ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराना ने दिया। संचालन ममता पुगलिया ने किया।

## बोरावड़

साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित 'प्रेक्षा प्रवाह - शक्ति और शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल बोरावड़ द्वारा किया गया। महिला मंडल के मंगलाचरण से प्रारंभ हुयी

कार्यशाला में उपस्थित जनमेदिनी को प्रेक्षाध्यान का महत्व बताते हुये साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने कहा कि ध्यान की आवश्यकता योगी, रोगी और भोगी सभी को है। ध्यान एक चार्जर की तरह है जो हमें चार्ज करता है, ऊर्जा का प्रवाह करता है। ध्यान का इतना महत्व है कि चार मिनट के ध्यान को भी तीन दिवस के उपवास के समान कहा है। आचार्य श्री भिक्षु एक श्वाच्छोश्वास में लोग्सस का ध्यान करवाते थे। ध्यान का प्रारंभिक प्रयोग है दीर्घ श्वास प्रेक्षा और दीर्घ श्वास के अभ्यास से एकाग्रता बढ़ती है, मनोबल बढ़ता है और आयुष्य भी दीर्घ होता है। अतः ध्यान का प्रयोग जीवन का कर्म बन जाये। गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के इंगित को पाकर प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने आगमों का गहन अध्ययन कर, प्रयोग कर, प्रेक्षाध्यान का अवदान दिया। साध्वी मौलिकयशा जी ने "प्रेक्षाध्यान क्यों और कैसे?" विषय पर प्रकाश डालते हुये अन्य पद्धतियों की तुलना में प्रेक्षाध्यान की सटीकता और मूल्यवत्ता की व्याख्या की और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये। साध्वी भावितयशा जी ने सुमधुर गीतिका के संगान से ध्यान का महत्व बताया। तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा "प्रेक्षाध्यान में ज्ञान-विज्ञान" विषय पर रोचक प्रस्तुति दी गई। कुशल संचालन अध्यक्ष हर्षा चोरडिया द्वारा किया गया।

## आर.आर. नगर

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल आरआर नगर के तत्वावधान में 'उड़ान - सुनहरा भविष्य' के तहत 'एक कदम स्वावलंबन की ओर' दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी का स्वागत किया। सह संयोजिका निशा छाजेड़ ने शिप्रा कोठारी का परिचय दिया। शिप्रा कोठारी ने केक आदि खाद्य पदार्थ बनाने का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने सभी बहनों की जिज्ञासा का सहज तरीके से समाधान किया। आभार ज्ञापन मंत्री पदमा मेहर ने तथा कार्यक्रम का संचालन संयोजिका जया

शामसुखा ने किया। लगभग 70 बहनों की उपस्थिति रही।

## जसोल

अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा आधुनिक जीवनशैली पारिवारिक संस्कार सहअस्तित्व या संघर्ष विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से कार्यशाला का आरंभ हुआ। अध्यक्ष कंचन देवी ने सबका स्वागत किया और वाद-विवाद प्रतियोगिता के विषय और नियमावली की जानकारी दी। प्रतियोगिता में कुल 9 बहनों ने भाग लिया। प्रथम उपासिका लीलादेवी सालेचा, द्वितीय स्थान जशोदा देवी सखलेचा व चंदा चौपड़ा एवं तृतीय स्थान पुष्पा देवी बुरड़ ने प्राप्त किया। निर्णायक की भूमिका तेयुप जसोल के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण भंशाली, डीपीएस स्कूल की प्रधानाचार्य रेखा चौपड़ा ने निभाई। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री अरुणा डोसी ने किया और आभार ज्ञापन सरला नाहटा ने किया।

## मदुरै

अभातेमम के निर्देशानुसार 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार सह अस्तित्व या संघर्ष' विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन तेमम मदुरै द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष लता कोठारी ने सबका स्वागत किया और वाद विवाद प्रतियोगिता के नियमों को समझाया। सभी प्रतिभागियों ने पक्ष और विपक्ष दोनों मुद्दे पर अपने विचार प्रकट किये। आभार ज्ञापन मंत्री सुनीता कोठारी ने दी।

## हैदराबाद

अभातेमम द्वारा निर्देशित 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार - सहअस्तित्व या संघर्ष' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। मंडल की बहनों द्वारा

प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी का स्वागत करते हुए निर्णायक बहनों विशाखा मंशाकर और अंजू बैद का परिचय दिया। साध्वी गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आधुनिकता व पुराने संस्कारों में सामंजस्य बिठाना जरूरी है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि आगे बढ़ना जीवन की उपयोगिता है, पर उसके लिए जीवन की समीक्षा अपेक्षित है। साध्वी मेरुप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सुधा जैन व द्वितीय स्थान प्रभा जैन ने प्राप्त किया। सभी प्रतियोगियों का सम्मान सर्टिफिकेट व उपहार देकर किया गया। कार्यक्रम का संयोजन सरला भूतोडिया एवं प्रेम संचेती ने किया। संयोजिका बहनें - शोभा गोलछा व सुनीता जैन का भरपूर सहयोग रहा। आभार ज्ञापन अल्पना दुगड़ ने किया।

## गंगाशहर

अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन गंगाशहर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। वाद विवाद का विषय था - 'आधुनिक जीवन शैली एवं पारिवारिक संस्कार : सह-अस्तित्व या संघर्ष।' प्रतियोगियों ने अपने-अपने पक्ष को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। साध्वी लब्धियशा जी ने कहा कि संस्कारों का आधुनिक जीवन शैली के साथ सामंजस्य होना अनिवार्य है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के प्रभाव से अपने जीवन को संपादित करना चाहिए। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि सृष्टि परिवर्तनशील है, समाज में परिवर्तन होता है, वहां प्रबंधन होना अनिवार्य है। जीवन शैली में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन परिवार में आपसी प्रेम, विश्वास बना रहता है, तो यह परिवर्तन बाधक नहीं होता। तीन बातें जो हमेशा हमारे भीतर होनी चाहिए वह है आत्म नियंत्रण, आत्मविश्वास और आत्मानुशासन। इससे व्यक्ति स्वयं तथा अपने परिवार दोनों को खुश बना सकता है। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका श्री जैन कन्या महाविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. धनपत

रामपुरिया एवं उदयरामसर स्थित शिव रतन सरकारी विद्यालय के प्रिंसिपल रतन छलाणी ने निभाई। रामपुरिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि शब्द तो सबके पास होते हैं, लेकिन उसे किस तरीके से हम अपनी बात कहने में उपयोग में लाते हैं वह कला होती है। तेरापंथ धर्मसंघ में हमें अपनी कला को निखारने का एक अच्छा प्लेटफार्म मिलता है, इसलिए हमें इसका उपयोग करना चाहिए। रतन छलाणी ने कहा कि हमें अपने बच्चों में संस्कारों का पोषण करना चाहिए ताकि आधुनिक जीवन शैली के नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़े। प्रतियोगिता में क्रमशः स्नेहलता सेठिया, दीप्ति लोढ़ा एवं सुनीता पगलिया ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। महिला मंडल द्वारा निर्णायकों का साहित्य भेंट कर अभिनंदन किया गया तथा विजेता रही बहनों को पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम मंडल की पूर्व अध्यक्ष संतोष बोथरा के संयोजन में सफल रूप से आयोजित किया गया। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने सभी का आभार किया।

## नवरंगपुर

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन संजय गरिमा सुराणा के निवास स्थान पर किया गया। कार्यशाला का विषय था 'प्री वेडिंग शूट और सोशियल मीडिया।' कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। तत्पश्चात गरिमा सुराणा ने सबका स्वागत किया। उपस्थित बहनों ने अपने-अपने पक्ष पर प्रस्तुति दी। अंत में बिंदिया जैन ने आभार व्यक्त किया।

## नोखा

'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 'आधुनिक जीवन शैली और पारिवारिक संस्कार' विषय पर तेरापंथ महिला मंडल नोखा द्वारा किया गया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल की सदस्याओं ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने किया। साध्वी कुसुमप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।



## 'शासनश्री' साध्वी ज्योतिश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

### छवि थी जिनकी सबसे न्यारी

#### ● साध्वी प्राञ्जलप्रभा ●

शासनश्री साध्वी ज्योतिश्री, लगती थी सबको मनहारी। शांति निकेतन प्रांगण में, छवि थी जिनकी सबसे न्यारी। गिरिगढ़ में तुमने जन्म लिया, गुरु तुलसी कर संयम लिया। शुभ योगों से ज्योतिष जीवन, गुरुत्रय किरण मंगलकारी। सहज सरल मृदु व्यवहारी, स्वाध्याय जाप में इकतारी। जीवन मस्त फकीरी सा, सदगुण की नित खिलती क्यारी। श्री ही धी घृति उपशमता, समता ममता तप समरसता। नियमितता से हर काम किया, मध्यस्थ भावना थी न्यारी। भिक्षुगण में खूब काम किया, सुख पूर्वक खेवा पार किया। संयम यात्रा थी सुखकारी, अग्रिम यात्रा श्रेयस्कारी। पुण्योदय से यह संघ मिला, संयम सेवा शुभ योग मिला। गुरु महाश्रमण की सुख शय्या, प्राञ्जल गुप मन से आभारी।

लय- महावीर तुम्हारे चरणों में

### जीता जग झंझाल

#### ● मुनि कमलकुमार ●

तुलसी गुरु कर कमल से, संयम व्रत स्वीकार। महाश्रमण युग में किया, अपना आत्मोद्धार। ज्योतिश्री जी ने किया, सचमुच काम कमाल। संयम जीवन सफल कर, जीता जग झंझाल। विशदप्रभा लब्धियशादिक, सतियां गाती गीत। फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, बन गई तिथि पुनीत। टूंगरगढ़ जन्मस्थली, गंगाशहर प्रयाण। कमल श्रेयांसादिक श्रमण, करते हैं गुणगान।

❖ जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें  
❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

## शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर चारित्रात्माओं के उद्गार

### जहाँ का सितारा तू मां

#### ● साध्वी भावितयशा ●

जहाँ का सितारा तू मां होली पवित्र बनी तुझको पाकर ममता की मूरत मां... ओऽऽऽ जहां का सम, शम, श्रम ही पूजा तुम्हारी शासन माता तू मां, ओऽऽऽ जहां का गण- गणपति की दृष्टि मिली तो, उन्नति करते रहे। अपनी सहोदरी से, नाता तोड़ा, सर्व समर्पित रहे। कला से कनकप्रभा, साध्वी प्रमुखा। गणवन शान, महान है माँ। भक्ति रस से भीगा, काव्य रस तुम्हारा, जन-जन मन मोहे। सृजन शक्ति कौशल कला का विलक्षण, साहित्य जग शोभे। उपशम, रसमय, मातृहृदया, संपादन तेरे, गण संपदा।। निरहंकारिता, निस्पृहता से, गण दिल वास करे। आधी दुनिया, गण के तुम थे, श्रमणीगण शिरमोर बने। सौभाग्यी हम, तुझको पाया, तुलसी कृति, भव्यकथा।।

लय - दिल है कि मानता नहीं

## साइक्लोथॉन का आयोजन- फिटनेस और शिक्षा के प्रति जागरूकता

### हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद द्वारा कोंडापुर में साइक्लोथॉन तृतीय एडिशन का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 'Ride-Raise-Educate' अभियान के तहत संपन्न हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य फिटनेस और शिक्षा को बढ़ावा देना था। इस साइक्लोथॉन में सैकड़ों प्रतिभागियों ने जोश और उत्साह के साथ हिस्सा लिया। पीले रंग की टीपीएफ टी-शर्ट पहने सभी साइकिल सवारों ने स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार का संदेश दिया। कार्यक्रम में महिलाओं, पुरुषों, युवाओं और बच्चों ने समान रूप से भागीदारी की।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। इसके बाद टीपीएफ हैदराबाद अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने सभी का स्वागत किया और टीपीएफ द्वारा आयोजित प्रत्येक संघीय कार्यक्रम से जुड़े रहने की अपील की। TPF के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठोटिया, राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद और ऑर्गनाइजेशनल डेवलपमेंट चेयरमैन ऋषभ दूगड़

ने स्वस्थ जीवनशैली और शिक्षा के महत्व पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन को सफल बनाने में प्रायोजक प्रवीण, अक्षय और आदित्य लोढ़ा का विशेष योगदान रहा।

कार्यक्रम के दौरान 'फास्टेस्ट 5 राउंड' और 'ट्रेजर हंट' प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। पुरुषों की श्रेणी में देवांश और महिलाओं की श्रेणी में स्मृति ने सबसे पहले 5 लैप्स पूरे कर जीत हासिल की, जबकि ट्रेजर हंट प्रतियोगिता में कंदर्प दुधोड़िया विजयी रहे। साइक्लोथॉन के समापन पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस ऐतिहासिक पहल के तहत टीपीएफ राष्ट्रीय टीम द्वारा देशभर में 100 से अधिक शहरों में एक साथ इस प्रकार की साइक्लोथॉन आयोजित की गई, जो फिटनेस और शिक्षा के प्रति समाज को प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

सफल आयोजन के लिए संयोजक हितेश बोथरा, पीयूष भूतोरिया, यश बागरेचा, प्रायोजक प्रवीण, अक्षय, आदित्य लोढ़ा और सभी प्रतिभागियों के प्रति साधुवाद ज्ञापित करते हुए मंत्री निखिल कोटेचा ने सभी का आभार प्रकट किया।

## पृष्ठ 1 का शेष

### अनित्यता का चिंतन...

आचार्यश्री ने भक्तामर स्तोत्र का उल्लेख करते हुए बताया कि यह प्रत्येक जैन परंपरा को मान्य है। इसका सतत स्वाध्याय सभी के लिए हितकारी है। नवकार महामंत्र को संपूर्ण जैन समाज में विशेष स्थान प्राप्त है, जो जैन एकता का प्रतीक भी है। इसी प्रकार, तत्त्वार्थसूत्र को भी सभी स्वीकार करते हैं।

यद्यपि आचार-सिद्धांतों में कुछ भिन्नताएँ हो सकती हैं, फिर भी मूलतः सभी परंपराएँ एक ही सिद्धांत को मानने वाली हैं। अनेकता में भी एकता का दर्शन किया जा सकता है। जैसे वृक्ष की अनेक शाखाएँ होती हैं, परंतु मूल एक ही होता है, वैसे ही जैन धर्म की विभिन्न धाराओं के मूल में एकता है। आचार्यश्री ने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि हमारी साधना उत्तम होनी चाहिए, हममें परस्पर मैत्री भाव बना रहना चाहिए। यदि हमारी साधना शुद्ध एवं निर्मल रहे, तो वह हमें आध्यात्मिक उन्नति के शिखर तक पहुँचा सकती है।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व मुनि राजकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। 'जैन जयतु शासनम्' कार्यक्रम के अंतर्गत मूर्तिपूजक जैन समाज-गांधीधाम के अध्यक्ष चंपालाल पारेख, अखिल कच्छ दिगम्बर जैन समाज-गांधीधाम के अध्यक्ष अश्विन जैन, स्थानकवासी छह कोटि जैन संघ-गांधीधाम के अध्यक्ष प्रदीप मेहता, अचलगच्छ जैन संघ के मंत्री जीतूभाई छेड़ा, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष नरेन्द्रभाई सिंघवी, आठ कोटि मोटी पक्ष के अध्यक्ष रोहितभाई शाह, डेवलपमेंट कमिश्नर भानू जैन, ईस्ट कच्छ के पुलिस अधीक्षक सागर बाघमार, जेडीए के पूर्व चेयरमैन मधुकांत भाई शाह, इण्टरनेशनल महावीर जैन मिशन-यूके इंग्लैण्ड

के अरविंद जैन ने आचार्यश्री के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

### ज्ञानार्जन में हो तर्क....

ज्ञान संबंधी कोई विषय हो तो तर्क कर सकते हैं, लेकिन जहां अपने गुरु व अपने विशिष्ट की आज्ञा हो तो वहां सतर्कता रखने का प्रयास करना चाहिए। धर्म को सही तरीके से काम में लें तो आत्मा का कल्याण हो सकता है और यदि विषयासक्ति की बात हो जाए तो भला धर्म से कितना लाभ प्राप्त हो सकता है। शास्त्र की वाणियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। धर्म के क्षेत्र में भी सही तरीके से कार्य करने का प्रयास हो।

### साध्वी ज्योतिश्रीजी की स्मृति सभा का आयोजन

आचार्यप्रवर की सन्निधि में साध्वी ज्योतिश्रीजी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। 7 मार्च को गंगाशहर सेवा केंद्र में प्रवासित साध्वी ज्योतिश्रीजी का देवलोकगमन हो गया था। पूज्यवर ने साध्वीश्री का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए मध्यस्थ भावना स्वरूप चार लोगसस का ध्यान करवाया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी एवं मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी ने साध्वीश्री की आत्मा के आध्यात्मिक उत्थान हेतु मंगलभावना व्यक्त की पूज्यवर के स्वागत में सेंट एलिजाबेथ स्कूल-अंजार के फादर जूडी एवं माउण्ट कार्नियर हाई स्कूल की प्रिंसिपल सिस्टर सहाय विमला ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए आचार्यश्री के प्रवास को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# 77वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर विविध कार्यक्रम

## हैदराबाद

अणुव्रत अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद एवं साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी की प्रेरणा से निर्मला बैद ने जीजीएचएस स्कूल मारेडप्पल्ली में अणुव्रत स्थापना दिवस के 77वें वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत, भक्तामर स्तोत्र के पद्य एवं तुलसी अष्टकम के पाठ से किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत आंदोलन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि राजस्थान के सरदारशहर में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की सूझबूझ एवं दिव्य दृष्टि से इस आंदोलन की स्थापना की गई थी। वर्तमान में पूज्य आचार्य महाश्रमण जी अपनी पदयात्रा के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन की गरिमा एवं प्रभाव को बढ़ा रहे हैं।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया गया कि जब से यह स्कूल प्रारंभ हुआ है, तब से यहाँ अणुव्रत से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, अणुव्रत नैतिकता परीक्षाएँ एवं अन्य शिक्षाप्रद गतिविधियाँ होती रही हैं। इस अवसर पर विद्यार्थियों को अणुव्रत के विभिन्न नियमों की शपथ दिलाई गई। इसके अतिरिक्त, ध्यान एवं योग से संबंधित कुछ विशेष क्रियाएँ भी करवाई गईं। कार्यक्रम में श्री श्वेतांबर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपने विचार प्रस्तुत किए। हनुमान जिनेंद्र बैद की ओर से तेलुगु भाषा में अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया।

## बेंगलुरु

मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, बेंगलुरु द्वारा 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चारण से हुआ। शांतिनगर की बहनों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। महासभा से प्रकाश लोढ़ा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन कर सभी को संकल्प दिलाया। निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत

ने आचार्यश्री तुलसी की दूरदृष्टि और अणुव्रत की विशिष्टता पर अपने विचार रखे। मुनि जयेश कुमार जी ने अणुव्रत पर अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन में संकल्प आवश्यक हैं। धर्म को केवल कर्मकांडों तक सीमित कर दिया गया है और इसे स्वार्थ सिद्धि का साधन बना दिया गया है, जबकि अणुव्रत ने धर्म को इन बंधनों से मुक्त किया है। यह संप्रदाय और जाति की सीमाओं को लांघकर एक व्यापक नैतिक आंदोलन बना है। मुनि मोहजीत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने सार्वभौमिक चिंतन, आंतरिक जागरण और भगवान महावीर के संदेशों को नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करते हुए अणुव्रत की स्थापना की। उन्होंने व्यक्ति-व्यक्ति में बदलाव की चेतना जागृत की और सभी श्रद्धालुओं को अणुव्रत के मिशन को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लेने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में समिति के पदाधिकारी, सदस्यगण, तेरापंथ सभा गांधीनगर के अध्यक्ष पारसमल भंसाली, विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, यशवंतपुर सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया, टी. दासराहली सभा अध्यक्ष भगवती लाल मांडोत तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम की व्यवस्था में प्रकाश कुंडलिया और जितेंद्र घोषल का विशेष सहयोग रहा। कुशल संचालन मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने किया तथा सह मंत्री बबीता चोपड़ा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

## हावेरी

साध्वी पुण्यशशाजी के सान्निध्य में हावेरी (कर्नाटक) क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन के 77वें स्थापना दिवस का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से हुआ, जिसे सभा एवं महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया। साध्वी बोधिप्रभाजी ने अणुव्रत की महत्ता व उपयोगिता को प्रतिपादित करते हुए आत्महत्या एवं भ्रूणहत्या के निषेध पर बल दिया और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। साध्वी विनीतयशाजी ने कहा कि आवश्यकताओं का न्यूनकरण, अहंकार का विलय, इच्छाओं पर नियंत्रण,

संयम, संतोष, पवित्रता, परस्परता एवं समता – ये अणुव्रत के स्वर्णिम सूत्र हैं। साध्वी पुण्यशशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने मानव को सच्चा मानव बनाने के लिए यह आंदोलन प्रारंभ किया। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से संयममय जीवन जीने पर बल दिया गया, जिससे लाखों लोगों को व्यसन मुक्त किया गया। अणुव्रत की आत्मा संयम है, और संयम से ही जीवन मूल्यवान बनता है। इच्छाओं के संयम से जीवन में प्रामाणिकता एवं पवित्र आचरण का विकास होता है, और अणुव्रत आत्मविश्वास प्रदान करता है। साध्वीश्री ने उपस्थित जनसमूह को अणुव्रत आचार संहिता के नियम बताए और प्रत्याख्यान भी कराया। कार्यक्रम में बालचंद जीरावला, कुंदनमल संचेती, चिरंजीलाल संचेती, राकेश जीरावला, हितैष संचेती और दीपक संचेती ने गीतिका का संगान किया। मंच का कुशल संचालन साध्वी वर्धमानयशाजी ने किया।

## जसोल

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस स्थानीय नवकार माध्यमिक विद्यालय, जसोल में अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति पर भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय की बालिकाओं द्वारा अणुव्रत गीत के मंगलाचरण से हुई। इसके बाद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आचार्य श्री तुलसी ने 1 मार्च 1949 को सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन की नींव रखी थी। समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए तथा छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से जीवन सुधार के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई थी। 77 वर्ष पूर्व एक बीज के रूप में अंकुरित अणुव्रत आंदोलन आज एक वटवृक्ष का रूप ले चुका है और न केवल देशभर में बल्कि विदेशों में भी इसकी हजारों शाखाएँ सुचारू रूप से कार्यरत हैं। इस अवसर पर विद्यालय में नशामुक्ति विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 23 विद्यार्थियों ने भाग

# बोलती किताब

## 7 बातें ज्ञान की



**7 बातें ज्ञान की** - पुस्तक आध्यात्मिक साधना और ज्ञानार्जन के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है। यह पुस्तक बताती है कि साधना केवल सामुदायिक प्रयास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे एकाकी रूप में भी किया जा सकता है। साधक अपने आध्यात्मिक उत्थान के लिए गण (समुदाय) में रहकर साधना कर सकते हैं, लेकिन यदि किसी विशेष परिस्थिति में वे स्वयं को सीमित महसूस करें, तो वे गण से अपक्रमण कर सकते हैं।

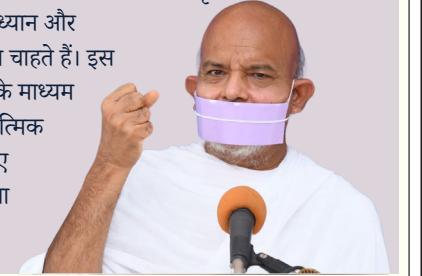
### आध्यात्मिक उन्नति और संशय

**निवारण** - इस पुस्तक में बताया गया है कि यदि कोई साधक अपने वर्तमान गण में ज्ञान और साधना का विकास करने में असमर्थ महसूस करता है, तो वह दूसरे गण में जा सकता है। इसी प्रकार, यदि किसी साधु के मन में श्रुत, चारित्र, तत्त्वज्ञान, या आचार से संबंधित संशय हैं और वर्तमान गण में उन्हें समाधान देने वाला कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिलता, तो वह ऐसे गण में जाने का निर्णय ले सकता है जहाँ उसे अपने संशयों का उत्तर मिल सके।

### ज्ञान के संवर्धन और संवहन की आवश्यकता

- पुस्तक इस बात को भी स्पष्ट करती है कि कई साधु अपने अर्जित ज्ञान और साधना के अनुभव को आगे बढ़ाना चाहते हैं। यदि उन्हें अपने वर्तमान गण में योग्य शिष्य नहीं मिलते, तो वे ऐसे समुदाय की तलाश करते हैं जहाँ वे अपने ज्ञान का सही उपयोग कर सकें। कुछ साधु केवल चुनिंदा ज्ञान साझा करना चाहते हैं, और इसके लिए वे अपने अनुरूप गण परिवर्तन कर सकते हैं।

**एकाकी साधना की स्वतंत्रता** - "7 बातें ज्ञान की" यह भी बताती है कि कुछ साधक सामुदायिक सेवा करने के बाद एकाकी साधना की ओर प्रवृत्त होते हैं। वे स्वयं को संघ की गतिविधियों से अलग कर ध्यान और आत्मचिंतन की गहराइयों में उतरना चाहते हैं। इस पुस्तक में बताए गए सात कारणों के माध्यम से यह समझाया गया है कि आध्यात्मिक स्वतंत्रता और आत्मविकास के लिए कभी-कभी गण से अपक्रमण करना आवश्यक हो सकता है।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> [books@jvbharati.org](mailto:books@jvbharati.org)

लिया। प्रतिभागियों ने नशे से होने वाली बीमारियों और अन्य हानियों पर प्रकाश डालते हुए नशामुक्ति के प्रयासों पर भी विचार प्रस्तुत किए। अणुव्रत समिति के मंत्री सफरखान ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया और बताया कि शराब, बीड़ी, सिगरेट जैसे नशीले पदार्थ केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को भी संकट में डालते हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी में नशे की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। सरकार अपने स्तर पर विभिन्न नशामुक्ति कार्यक्रम चला रही है, वहीं सामाजिक संस्थाएँ भी इस दिशा में अपने प्रयास कर रही हैं। भाषण प्रतियोगिता में लक्षिता बुरड ने प्रथम, ऋषभ ने द्वितीय और संघान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समिति द्वारा इन

विद्यार्थियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया, जबकि शेष प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में निर्णायक मंडल के सदस्यों और विद्यालय के शिक्षकों एवं अतिथियों का अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया। निर्णायक मंडल के सदस्य ईश्वरसिंह इंडा, पदमसिंह केंवरली और दुंगराराम बोगू ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञान विद्यालय के शिक्षक लक्ष्मणसिंह राजोत ने किया। इस कार्यक्रम का प्रायोजन महामंत्र यूनिफॉर्म, जसोल-बालोतरा द्वारा किया गया। सफल संचालन चंद्रप्रकाश खत्री ने किया।

# संयम और तप से प्रशस्त होता है आत्मानुशासन का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

गांधीधाम।

06 मार्च, 2025

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि आत्मानुशासन और परानुशासन दो महत्वपूर्ण शब्द हैं। आत्मानुशासन वह होता है जब व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण रखता है, जबकि परानुशासन वह है जिसे दूसरे लोग हमारे ऊपर लागू करते हैं। हालांकि शास्त्रों में दोनों अनुशासनों की चर्चा की गई है, लेकिन उत्तम यह है कि हम आत्मानुशासन का पालन करें।

आचार्यश्री ने कहा कि हमारे जीवन का मूल आत्मा है, लेकिन इसके साथ शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर भी नियंत्रण आवश्यक है। इन सभी पर अनुशासन रखने से ही आत्मानुशासन की प्राप्ति होती है। संयम और तप से आत्मानुशासन का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने कहा कि शरीर, वाणी, मन और इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिए। तप की साधना और ध्यान की साधना से आत्मा पर अनुशासन लाया जा सकता है। गलत कार्य न करें, वाणी पर संयम रखें, और



बोलने से पहले सोचें। झूठ और कटु वाणी से बचें, बल्कि सत्य और मधुर बोलें। मन की चंचलता पर ध्यान और भाव क्रिया से नियंत्रण रखें, ताकि हमारे मन में केवल अच्छे और कल्याणकारी

विचार आएँ। गृहस्थों को कई बार चिन्तन करना पड़ता है, लेकिन किसी का बुरा चिन्तन न करें। अनावश्यक और असत् चिन्तन से बचें। इन्द्रियों पर संयम रखें— अच्छा सुनें, अच्छा देखें, और अच्छा

बोलें। जब हम अच्छा सोचते और अच्छा कार्य करते हैं, तो यह आत्मानुशासन का परिणाम होता है।

आत्मानुशासन के अभाव में परानुशासन की आवश्यकता पड़ सकती

है, जो वांछनीय नहीं है। हमें अच्छे मार्ग पर चलना चाहिए, जहां हम स्वयं पर शासन करके अनुशासित बनें। आचार्यश्री ने कहा कि सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बातें भी आत्मानुशासन का ही हिस्सा हैं। गृहस्थ जीवन में इन तीनों तत्वों के साथ आध्यात्मिकता का वास हो सकता है।

इस अवसर पर गांधीधाम महानगर पालिका द्वारा आचार्यश्री का नागरिक अभिनंदन किया गया। दीनदयाल पोर्ट ऑथोरिटी, काण्डला के नवीश शुक्ला, इंडियन फॉरेन सर्विसेज के डेवलपमेंट कमिश्नर दिनेश सिंह, अमरचंद सिंघवी इंटरनेशनल स्कूल के प्रिंसिपल मृदुल वर्मा, अग्रवाल समाज के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गुप्ता, गांधीधाम चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष महेश पुंज, श्री गुरुद्वारा गुरुनानक सिंह सभा सिख समाज के सतपाल सिंह, आठ कोटी मोटी पक्ष के अध्यक्ष रोहित भाई शाह, तेरापंथ सभा गांधीधाम के सहमंत्री जितेंद्र सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## जीवन में प्रतिदिन कुछ नया सीखने का प्रयास करें

कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में व्योम न्यू अलीपुर में 'जीवन प्रबंधन के सूत्र' विषयक विशेष प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि जन्म के साथ जीवन का प्रारंभ और मृत्यु के साथ उसका समापन होता है, लेकिन जन्म और मृत्यु से अधिक मूल्यवान जीवन का संचालन होता है। कुछ लोग हंसकर तो कुछ रोकर, कुछ ढंग से तो कुछ ढोंग से जीवन जीते हैं। जीवन जीना एक बात है, लेकिन प्रबंधन के साथ स्वाभिमानपूर्वक जीना दूसरी बात है।

मुनिश्री ने ने जीवन प्रबंधन के चार महत्वपूर्ण सूत्रों पर प्रकाश डाला — लाइटिंग (प्रकाश), लर्निंग (सीखना), लविंग (प्रेम) और लॉफिंग (हास्य एवं प्रसन्नता)। उन्होंने कहा कि मनुष्य का जीवन अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है और इसे श्रेष्ठ तरीके से जीने के लिए भीतर ज्ञान का प्रकाश फैलाना आवश्यक है। ज्ञान को केवल पुस्तकों में सीमित न रखकर, उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए। जीवन में प्रतिदिन कुछ नया सीखने का

प्रयास करना चाहिए, क्योंकि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। प्रेमपूर्ण व्यवहार दूसरों के साथ मैत्रीभाव विकसित करता है और तनाव मुक्त रहने के लिए प्रसन्न रहना आवश्यक है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि जीवन को सुखी बनाने के लिए अतिक्रोध और कटु वाणी से बचना चाहिए, क्योंकि वाणी की सभ्यता में जीवन की भव्यता छिपी हुई है। मुनि कुणाल कुमार जी ने अपने सुमधुर गीतों से कार्यक्रम को संगीतमय बना दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एडवोकेट गोपाल हल्दर और 'युवाशक्ति पत्र' के संपादक सुधांशु शेखर ने गुरु महिमा का वर्णन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। व्योम के अध्यक्ष सागरमल भूरा ने स्वागत भाषण दिया, जबकि समीक्षा बच्चावत ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्या एवं पश्चिम बंगाल प्रभारी संगीता बाफणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पी.एस. ग्रुप के चेयरमैन सुरेंद्र दुगड़ और बेहाला श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सफल संचालन मुनि परमानंद जी ने किया, जबकि सुनील नाहटा ने आभार ज्ञापित किया।

## सात दिवसीय योगा फेस्टिवल संपन्न

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद, तेरापंथ सेवा समाज एवं प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग अहमदाबाद द्वारा संयुक्त रूप से सात दिवसीय योगा फेस्टिवल का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस आयोजन में योग प्रशिक्षकों के रूप में सोहन भरसारिया, जवेरीलाल संकलेचा, रुपलबेन पंड्या, धनराज छाजेड, धर्मेन्द्र कोठारी, सुरेंद्र लुनिया, विमल बाफणा और मीनाक्षी घीया ने अपनी सेवाएँ दीं।

प्रतिदिन के सत्रों में विशेष रूप से मुनि डॉ. मदनकुमार जी, मुनि जंबुकुमार जी और मुनि मननकुमार जी ने सान्निध्य प्रदान किया। अंतिम दिन, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पंकज घीया ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सेवा समाज, प्रेक्षा वाहिनी और सभी सहभागियों को

धन्यवाद दिया। तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष सज्जनलाल सिंघवी ने सात दिवसीय कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में भी तेरापंथ को ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन हेतु प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम का कुशल संयोजन, संचालन, सूचना एवं आभार प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग के संवाहक एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने किया। इस अवसर पर हिट युवा फिट युवा के गुजरात राज्य प्रभारी कुलदीप नवलखा, तेरापंथ सेवा समाज के ट्रस्टी मंत्री दिनेश बालड और तेरापंथ अहमदाबाद प्रबंध मंडल की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ किशोर मंडल की सक्रिय सहभागिता रही। संयोजकों के रूप में दिनेश बागरेचा, महावीर संकलेचा, विजय लुनिया, कमलेश खाय्या, धवल मेहर और दीपक बच्चावत का सराहनीय योगदान रहा। अंतिम दिन लगभग 45 प्रतिभागियों की उपस्थिति रही।

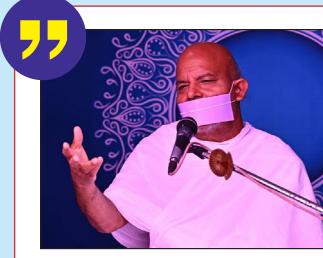
# कषाय को प्रतनू करना रहे हमारी साधना का लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

शीर्षाया।

04 मार्च, 2025

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमण जी गांधीधाम के बाहरी क्षेत्रों की यात्रा कराते हुए नीवा होम्स परिसर में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैन वांग्मय में 'कषाय' शब्द आता है। कषाय वे होते हैं जिनसे कर्ममल की आय होती है। कर्म बंध दो प्रकार के होते हैं—साम्प्रायिक बंध और ईर्यापथिक बंध। जो सकषाय बंध होता है, वह साम्प्रायिक बंध कहलाता है।

दसवें गुणस्थान तक सकषाय बंध यानी साम्प्रायिक बंध होता है। अकषाय अथवा वीतराग अवस्था में जो कर्म बंध होता है, वह ईर्यापथिक बंध कहलाता है। ग्यारहवें, बारहवें एवं तेरहवें गुणस्थान में ईर्यापथिक बंध होता है, जो मात्र योग से होता है। वहाँ कषाय नहीं होता, यह बंध नाममात्र का होता है। एक समय में बंधा, दूसरे में भोगा और तीसरे में वह कर्म समाप्त हो गया। सकषाय बंध गीली मिट्टी के गोले के समान होता है, जबकि ईर्यापथिक बंध सूखी मिट्टी के गोले के समान होता है।



सिद्ध हो या संसारी, आठ आत्माओं में से कम से कम तीन आत्माएँ तो प्रत्येक जीव में मिलती हैं—द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा और दर्शन आत्मा। बाकी पांच आत्माएँ (कषाय, योग, ज्ञान, चारित्र और वीर्य आत्मा) स्थिति के अनुसार होती हैं।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अयोगी केवली, जो कि चौदहवाँ गुणस्थान है, वहाँ बंध होता ही नहीं है। वहाँ न कषाय होता है और न ही योग। कर्म बंध के मुख्य दो कारण होते हैं—योग या कषाय। चौदहवाँ गुणस्थान तो शैलेषी अवस्था होती है। इन गुणस्थानों को मिलाकर बंध के संबंध में तीन भाग किए जा सकते हैं—साम्प्रायिक बंध, ईर्यापथिक बंध और अबंध अवस्था वाले गुणस्थान। साम्प्रायिक बंध दसवें गुणस्थान तक होता है। ईर्यापथिक बंध

ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें गुणस्थान में होता है। चौदहवाँ गुणस्थान अबंध अवस्था का गुणस्थान है। सिद्धों में तो कोई भी बंध नहीं होता।

सिद्ध हो या संसारी, आठ आत्माओं में से कम से कम तीन आत्माएँ तो प्रत्येक जीव में मिलती हैं—द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा और दर्शन आत्मा। बाकी पांच आत्माएँ (कषाय, योग, ज्ञान, चारित्र और वीर्य आत्मा) स्थिति के अनुसार होती हैं। कषाय भी आत्मा का एक स्वरूप है। हमें अपनी साधना के माध्यम से कषाय को कमजोर करने का प्रयास करना चाहिए। क्रोध को उपशम के द्वारा, अहंकार को मार्दव के द्वारा, माया को आर्जव के द्वारा और लोभ को संतोष के द्वारा जीतने का प्रयास करना चाहिए। मूल में कषाय मुक्ति ही मोक्ष जाने का मुख्य आधार है। अकषाय की स्थिति, वीतरागता की स्थिति आ गयी तो अयोगी अवस्था आएगी ही और मोक्ष निश्चित ही प्राप्त होगा। हमारी आत्मा कषाय से मुक्त होकर सिद्धावस्था की ओर आगे बढ़े। पूज्यप्रवर के स्वागत में नीवा होम्स के डायरेक्टर हेमंत भट्टी ने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अहम्

## "शासनश्री" साध्वीश्री ज्योतिश्री जी का देवलोकगमन



### जीवन परिचय

- जन्म :** चैत्र शुक्ला सप्तमी वि.सं. 1999, श्रीडूंगरगढ़
- माता :** श्रीमती धापुदेवी धाड़ेवा
- पिता :** श्री जसकरणजी धाड़ेवा
- दीक्षा :** वि.सं. 2018, कार्तिक कृष्णा अष्टमी, बीदासर
- दीक्षा प्रदाता :** आचार्यश्री तुलसी
- विशेष :**
- कुंआरी अवस्था में संयम ग्रहण।
  - 13 वर्षों तक साध्वी लाडांजी, तत्पश्चात साध्वी गुलाबां जी एवं तत्पश्चात साध्वी हुलासांजी के साथ रहे।
  - शांत, सहज, सरल, जप तप मौन और स्वाध्याय में रत रहते।
  - 32 आगमों का पारायण।
- स्वर्गवास :** वि. सं. 2081, फाल्गुन शुक्ला अष्टमी (07 मार्च 2025) गंगाशहर

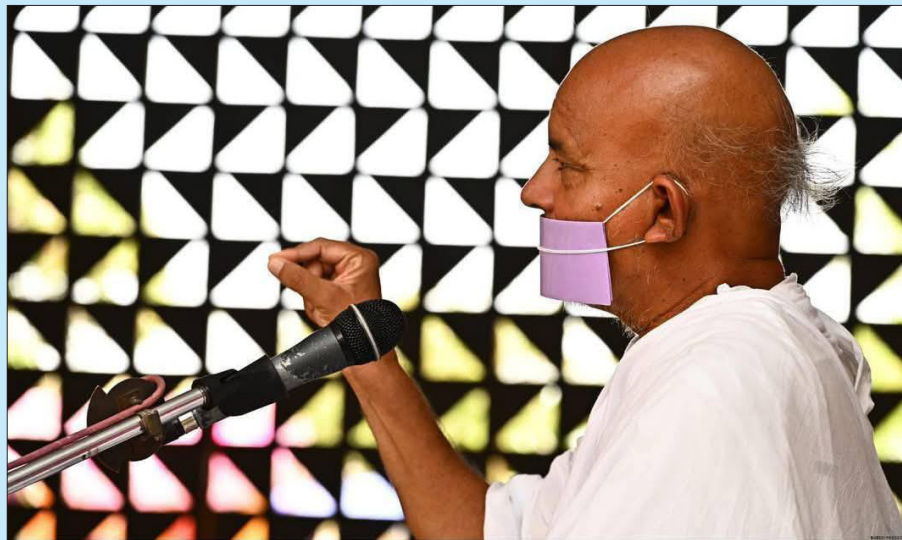
# बढ़ती उम्र के साथ परिग्रह को करें कम : आचार्यश्री महाश्रमण

रोयल पाम।

03 मार्च, 2025

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में इच्छा को आकाश के समान अनंत बताया गया है। यदि थोड़ा मिल जाता है, तो फिर और पाने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है, और यह क्रम निरंतर चलता रहता है।

साधना के क्षेत्र में इच्छाओं का परिसीमन और अनिच्छा का भाव आवश्यक है। गृहस्थों का पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन होता है, ऐसे में इच्छाओं का पूर्णतः त्याग करना कठिन हो सकता है, लेकिन उनका अल्पीकरण संभव है। यदि अनिच्छा की स्थिति प्राप्त न हो सके, तो भी अत्यधिक इच्छाओं से बचा जा सकता है। बढ़ती उम्र के साथ परिग्रह को कम करें, स्वामित्व का मोह त्यागें, और संयम की ओर अग्रसर हों। अनावश्यक उपभोग और उपयोग से बचें। छोटे-छोटे त्याग करने से आंतरिक चेतना जागृत हो सकती है। गृहस्थों को



अपने जीवन में एक पड़ाव के बाद साधु जैसा जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। श्रावक की प्रतिमाएं ग्रहण करने और सुमंगल साधना स्वीकार करने से त्याग की भावना मजबूत हो सकती है। इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती हैं, लेकिन प्रयासों से उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। इच्छाओं के

संयम से समाज भी श्रेष्ठ बन सकता है। धर्म के माध्यम से अनेक समस्याओं से बचा जा सकता है। ढलती उम्र में संयम को अपनाना चाहिए, जीवन में साधना का समावेश करना चाहिए और धार्मिक सेवा-कार्य में संलग्न रहना चाहिए। सभा-संस्थाओं की जिम्मेदारियों से धीरे-धीरे मुक्त होकर

मार्गदर्शन तक सीमित रहना उचित हो सकता है। इससे जीवन में धार्मिकता बढ़ती है। उम्र बढ़ने के साथ जीवन को एक नए मोड़ पर ले जाना चाहिए और आत्मा के कल्याण हेतु प्रयास करना चाहिए। इस दुर्लभ मानव जीवन का हमें सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए और इसे धार्मिक गतिविधियों में लगाना चाहिए।

युवावस्था है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि बेईमानी आवश्यक हो। जहां तक संभव हो, त्याग की भावना को अपनाते प्रयास करें। धर्म का संचय निरंतर करते रहें। जिस प्रकार धन का लेखा-जोखा रखा जाता है, उसी प्रकार हमें आत्मा का भी लेखा-जोखा रखना चाहिए और इसके प्रति जागरूक रहना चाहिए। इच्छाएं दो प्रकार की होती हैं - धार्मिक इच्छाएं और परिग्रह की इच्छाएं। जितना अधिक आध्यात्मिक विकास करें, उतना ही उचित है।

पूज्यवर के स्वागत में रोयल पाम से दीपक चंदनानी ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।